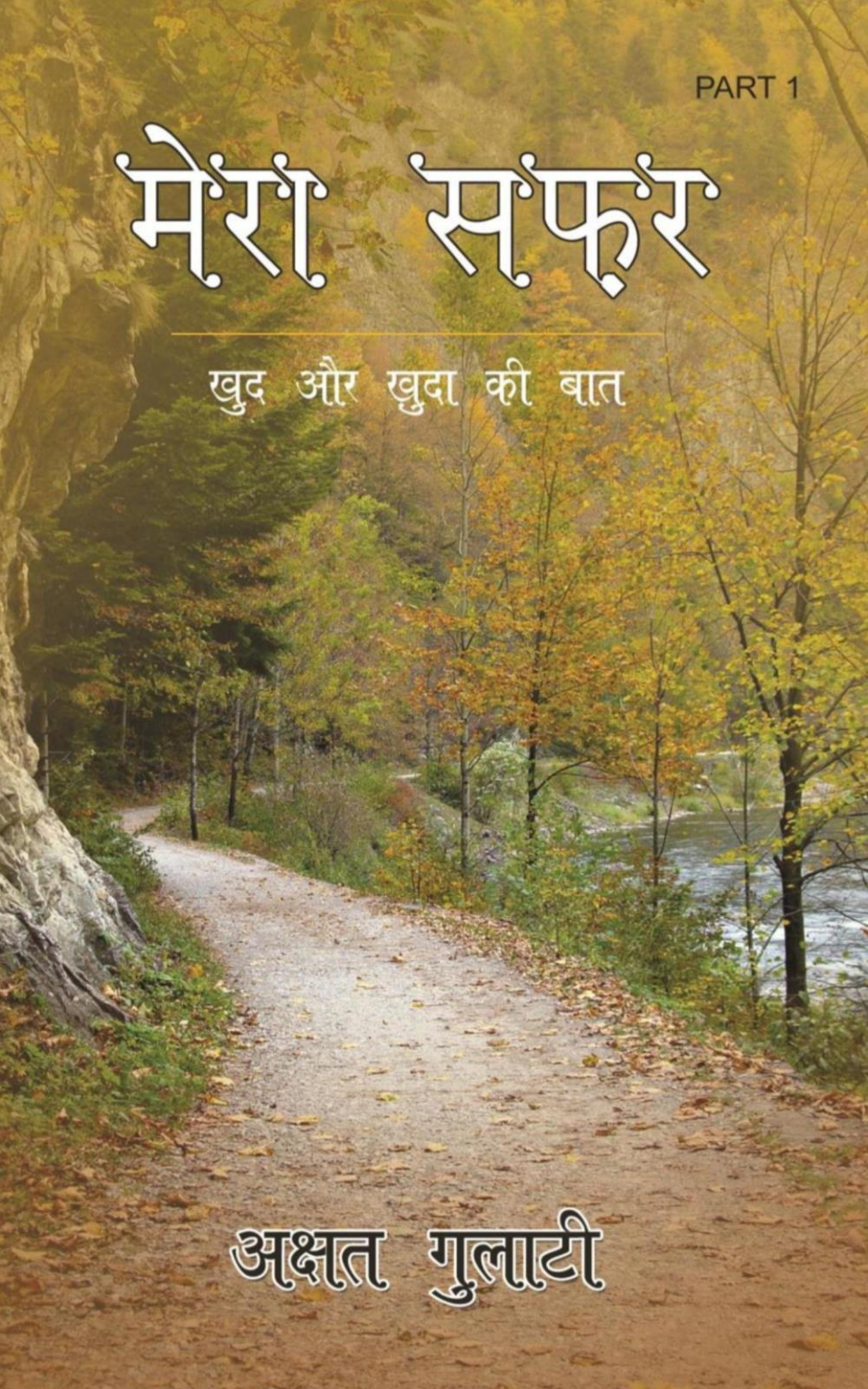
PART 1
मेरा सफ़र
खुद और खुदा की बात
अक्षत गुलाटी

मेरा सफ़र

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

_

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-420-8

Price: ₹ 190.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

मेरा सफ़र

खुद और खुदा की बात

अक्षत गुलाटी

This Book is Dedicated

To

Supreme Soul

Acknowledgments

First and foremost, I would like to thank the Almighty, Supreme Soul “Lord Shiva” who gives me the power to think beyond the limitations of this World Drama Stage. I would also like to thank my best friend Azhar for standing beside me throughout my life and ofcourse writing this book. He has been my inspiration and motivation for continuing to improve my knowledge and skills. I also want to thank my wonderful parents Shri Tirath Dass Gulati and Shrimati Krishana Rani for always making me smile. I’d really like to thank my colleagues Yusra Fatmi and Amit Dhatwalia for their help in the editing work of this book.

About The Author

Akshat was born on 13 October, 1989 in Tohana, Haryana. His father, Shri Tirath Dass Gulati is a ex-serviceman from Punjab national bank, tohana and mother is a home-maker. Akshat has 2 siblings, Gitu and Sweety, he being the youngest. He completed his school career from Tohana, Haryana and received his undergraduate and Post graduate degree in commerce and international business from Kurukshetra University, Haryana in 2009 and 2013 respectively. He is currently employed at a multinational company in Gurgaon as a Lead Financial analyst. Akshat's life is not just limited to himself or his family but has unconditional love, affection and care for mankind and that is what keeps him grounded and away from the worldly affairs. His thought process evolved since the time he felt a deep connection with spirituality, he strongly believes in the existence of one sole creator of the world who is in possession of all human souls. As far as his writing skills are concerned, Akshat has been trying to write from the time when he was in 5th standard but it started to transform into a book when he came to Delhi in 2011.

His writing skills took a leap when he came across with an International Spiritual Organization named "Brahmakumaris", this was an advancement in his knowledge about the Lord and his connection with the mankind. Each poem of his depicts a pure relationship between a Soul and his father Supreme soul.

किताब नही ये, जज़्बात हैं
किताब नही ये, जज़्बात हैं
चलती है सदा, वो फिकरात है
कभी खुद की, कभी खुदा की बात है
किताब नही ये, जज़्बात हैं
चलती है सदा, वो फिकरात है

सिर्फ मेरी नही, ये तेरी भी बात है
कोशिश की है बताने की
साथ समझ, वो साथ है

कभी खुद की, कभी खुदा की बात है
किताब नही ये, जज़्बात हैं
चलती है सदा, वो फिकरात है

यही तो कब से सोच रहा हुँ

क्या मंजिल पे अपनी, पहुंच रहा हुँ
बस तभी तो, की ये शुरुआत है
कभी खुद की, कभी खुदा की बात है
किताब नही ये, जज़्बात हैं
चलती है सदा, वो फिकरात है

लेखक की कलम से

नमस्कार! जैसा की मेरी पहली कविता से स्पष्ट है की मेरी कविताएँ मेरे खुद और खुदा के लिए जज़्बातों के बारे में हैं. अपना परिचय मैं इस बात से दे सकता हुँ की बचपन से ही मैं अध्यात्म से जुड़ा रहा हुँ और मेरा परम शक्ति परमात्मा पर गहरा विश्वास है, हालांकि मैं भक्ति से ज्यादा उस परम रूह से प्रेम के अधिकार का सम्बन्ध रखता हुँ और शायद यही वजह है की जीवन के हर एक क्षेत्र में मैंने सिर्फ इन पांच तत्वों से बनी काया की आवश्यकताओं पर ही ध्यान केंद्रित नही किया बल्कि अपनी इस रूह की वास्तविक जरूरतों जैसे प्रेम, शांति, निस्वार्थ भाव इत्यादि को सर्वोपरि रखा है. मेरी लिखी रचनाओँ में आपको एक पाक और खुदा से जुडी इक रूह के जज़्बात मिलेंगे जो की कहीं न कहीं हम सभ के जज़्बात हैं पर जिन्हें आज के इच्छाओं से भरे युग में हम चाह कर भी पहचान नही पाते।

इस किताब के जरिये मैं बस अपनी सोच को अपने हर एक भाई बहन तक पहुँचाना चाहता हुँ ताकि हर इक इंसान अपनी बनावटी पहचान से ऊपर उठ कर अपनी वास्तविक पहचान और उस पहचान को देने वाले को जान कर जीवन के वास्तविक मुल्यों से इस रंग मंच की दुनिया में अपने हर कर्म से अपनी साँसों को सफल कर जाये!

धन्यवाद!

अक्षत

विषय सुची

क्र.	विषय सुची	पृष्ठ क्र.
1.	वक़्त कहाँ से निकालते हो	1
2.	ऐसा लिख जाऊँगा कुछ	2
3.	इस रूह की तड़प तब जायेगी	5
4.	ये तो मुमकिन नहीं	7
5.	खामी तो है मुझमे मौला	8
6.	चले गए कई आँख सामने	10
7.	रोज़ सुबह जब होती है	11
8.	आँख मेरी नम होने लगी	14
9.	अक्सर लोग मुझे बेपरवाह समझते हैं	15
10.	जिंदगी एक सफर	18
11.	रोज़ मुलाकात होती है	19
12.	हालात से दोस्ती	22
13.	उम्मीद का जरिया है तु ही बस	23
14.	मेरा सफर हो या तेरा सफर	26
15.	मेरी आँखों में उस वक़्त आँसु आ रहे थे	27
16.	बात बनेगी तब ऐ बन्दे	30

मेरा सफ़र

मेरा सफर लेखक की उन रचनाओं का संग्रह है जो हमारी वास्तविक पहचान और उस पहचान को देने वाले का जिक्र करती है, जिसे हम इस इच्छाओं से भरे युग में चाह कर भी पहचान नहीं पाते. यह एक प्रयास है, लेखक की सोच को इस दुनिया के हर एक इंसान तक पहुंचाने का जिससे हर एक अपनी बनावटी पहचान से ऊपर उठ कर अपने वास्तविक स्वरूप जो की एक "रूह" है, को पहचान कर अपने शुभ कर्मों से इस रंग मंच की दुनिया में अपनी हर सांस को सफल कर जाए.

मेरा सफ़र हो या तेरा सफ़र
उसे तो रहती सब की खबर
खुदा तो खैर करेगा ही
हो जाएँ करम सब पाक अगर

लेखक से संपर्क हेतु :
info@merasafar.in
www.merasafar.in

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-420-8
9 789360 264208